राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 7 अंक : 88 15 अगस्त 2004

सदस्यता शुल्क : ——— भारत, नेपाल व सिक्किम में

वार्षिक : रुपए 40/- एक प्रतिः रुपए 5/-

इस अंक में

1.	बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग	2
2.	ध्यानाकर्षण बिन्दू व सूचना	40
3.	अहंकार (महर्षि शिवव्रतलाल जी)	41
4.	अनमोल वचन	43
5.	ज्ञान-सार	43
6.	सत्संग सार	44
7.	सतगुरु कृपा	47

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइटः- www.radhaswamidinod.org

इ-मेलः- info@radhaswamidinod.org

भिवानी : कैसेट क्रमांक : 97

दिनांक : 10 नवम्बर, 1992

समय : प्रातः

मस्तक लाग रही म्हारै गुरु के चरणों की धूल।
जब वो धूल चढ़ी मस्तक पर जी, दुविधा हो गई दूर।
ईड़ा पिंगला, सुषम्ना नाड़ी जी, सुरता पहुंची दूर।।
ये संसार विघ्न की घाटी जी, निकसे कोए बिरला शूर।
प्रेम भक्ति गुरु रामानन्द लाए जी, करी कबीर मंजूर।।

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों! यह शब्द छोटी उम्र में मैं बहुत गाया करता था। ये तो पता नहीं था कि धूल कहते किसको हैं। हम तो बाहर के चरणों की धूल की ही बड़ाई किया करते थे। बाहर के चरणों की धूल को मत्थे से लगा लिया बस। सारी दुविधा दूर हो गई। पर इसे तो सभी लगाते आए हैं। सभी अपने गुरु के चरणों की धूल लगाते हो। कोई राम, कष्ण जी की मूर्तियों की धूल लगाते हैं। कोई हनुमान जी की मूर्ति की धूल लगाते हैं। कोई देवी के चरणों को हाथ लगाकर अपने मस्तक पर लगाता है। कई—कई देहधारी गुरुओं की जूतियों को हाथ रगड़ कर उस धूल को मस्तक पर लगाते हैं। पर दुविधा तो किसी की दूर हुई नहीं देखी। क्यों नहीं हुई? क्योंकि हम सतगुरु के चरणों की धूल तक पहुंचे ही नहीं हैं। सो दुविधा दूर कैसे हो? नाम तो हर कोई ले लेता है। चरणों में भी हर कोई चला जाता है। कोई

भी ऐसा इंसान नहीं है जो किसी का सहारा नहीं लेता है। कोई देवी का, कोई गूगा, भैरों, पीर या किसी देवता का, कोई तीर्थ का, व्रत, होम, यज्ञ का सभी सहारा लेते हैं, यह सहारा भी शांति के लिए ही लिया जाता है। सोचते हैं इस सहारे से शांति मिल जाए। पर शांति नहीं मिलती। शांति तो तभी मिलती है जब उन चरणों की धूल मस्तक पर चढ़ जाती है। पर यह भी हमारा समझने का ही हेर फेर है। ये धूल तो मस्तक पर लगी हुई है। पर उस धूल तक हमारा पहुंचना मुश्किल है। अगर वहां तक पहुंचने की कोशिश करो तो कबीर साहब ने पहले ही अपने एक दोहे से ये बातें सिद्ध कर दी हैं। उन्होंने बहुत ही सुन्दर दोहा कहा है। वे कोई मामूली संत नहीं थे।

एक प्रेमी ने मुझसे कहा कि हम कबीर को नहीं मानते। मैंने कहा—फिर क्या बात है, यदि आप नहीं मानते तो। यह बात तो हम भी कह सकते हैं। जिसको आप मानते हो, उसको हम कह देंगे कि हम उसको नहीं मानते हैं। आप क्या कर लोगे? पर आप अपनी आत्मा पर, (छाती पर) हाथ रखकर बताओ कि आप जब बोलते हो या कोई शब्द वाणी करते हो, तो क्या कबीर की वाणी नहीं लेते हो? उसने कहा—लेते हैं। मैंने कहा—फिर तो आप बड़ा जुल्म करते हो। उसको मानते नहीं और उसकी वाणी लेते हो, उसकी शिक्षा लेते हो। यह तो बहुत घटिया बात है। जिसको आप मानते ही नहीं हो उसका तो आपको कुछ भी नहीं लेना चाहिए। अगर हम सत्संगी कहने लग जाएं कि हम तो इन देवी देवताओं को मानते ही नहीं है। हम तो वेदों को और शास्त्रों को मानते हैं। सो ये तो गलत बातें हैं। सत्संगियो को तो सभी मानने पड़ते हैं। कौन ऐसा है जो देवी देवताओं को नहीं मानता है? ये तो सभी सत्संगियों को मानने पड़ते हैं। क्योंकि पहले योगी लोग नीचे से चला करते थे तो उन सभी मुर्दों को मानते चलते थे। उन देवताओं

की पूजा करते हुए ही चलते थे। जब हम छठे चक्कर से अभ्यास करना शुरू करते हैं तो आगे जो भी रास्ते में आते हैं सब ही के नाम और धुनि सुनते हैं, उनकी पूजा ही करनी होती है। अगर कोई कहे कि मैं तो नहीं करता हूं। तो यह बात गलत है। संतमत में तो यही कहा जा सकता है—

मस्तक लाग रही मेरे गुरु चरणों की धूल।

वह धूल मस्तक पर कब लगती है? ऐ सत्संगियो! वह धूल तो जैसे इस दोहे में कहा है—

सतगुरु सिर पर राखिये, चलिये आज्ञा माहिं।
कहे कबीर ता दास को तीन लोक भय नाहिं।।

ये तीन लोक कौन से हैं? यह बात आपको कई बार बताई है। इन तीनों लोकों में काल का राज है। काल किसको कहते हैं? कई लोग कहते हैं कि काल नाम तो वक्त का है। यह बात बिल्कुल ठीक है। मैं पढ़ा लिखा नहीं हूं। आप लोग जानते हो कि जिसका समय है, वक्त है, मियाद है, वह काल के दायरे में है। वह कभी भी काल से बच नहीं सकता है। आप पूछोगे कि काल के दायरे से कौन निकलते हैं? कबीर साहब का यह दोहा मैंने आपको कई बार बताया है—

सतगुरु सिर पर राखिये, चलिये आज्ञा माहिं।
कहे कबीर ता दास को, तीन लोक भय नाहिं।।

भय किसको लगता है?

सतगुरु माथे से उतरे, शब्द विहूना होय।
ता को काल घसीटसी, रोक सके न कोय।।

यह सत्संग कबीर साहब के इन दोनों दोहों पर ही है। पहले दोहे में कहा है—

सतगुरु सिर पर राखिये,

अब सतगुरु की ढ़ाई मन वजन की काया को तो सिर पर

नहीं रख सकते हैं। फिर सतगुरु कौन है? वह सतगुरु तो शब्द ही है। उस शब्द को हम अपने सिर पर रखते हैं।

सिर पर शब्द को रखने का मतलब क्या है? जो शब्द धुनि करता है वह चरणामत तो है नहीं और न ही उसकी आवाज नीचे के चक्रों में आती है, न वह धार छाती से आती है और न ही हाथों में से आती है। उसकी आवाज तो छठे चक्कर के ऊपर से ही आती है। जो आवाज हम मुंह से निकालते हैं, इसे बेखरी कहते हैं। नाक की आवाज भी नीचे की आवाज है, कानों की आवाज भी नीचे की है। सो इसी कारण से संत कहते हैं कि **सतगुरु सिर पर राखिये।**

जब वही आवाज तुम्हारे नीचे के चक्रों से सिमट कर ऊपर जाती है और वहां सुरत शब्द को सुनती है इसे ही तो सतगुरु सिर पर रखना है। हर वक्त उसी का ख्याल रखना चाहिए। आप प्रश्न कर सकते हो कि हम इसका ख्याल रखें तो कैसे रखें? ये सारा जमाना ही तो ख्याल का है। ये ख्याल की ही भक्ति है। **जो ख्याल रखता है उसे ही उस काम में विजय मिलनी है। जिसका ख्याल ढ़ीला हो जाता है, जो उस ख्याल को भुला देता है, तो वह संसार में हार जाता है। ख्याल की ही भक्ति सब से बड़ी है।** आप पूछोगे—यह कैसे है? मैं आपको एक सीधी मिशाल देता हूं। आप अपने पैसे कमाते हो उन को बर्बाद नहीं करते हो। उनका ख्याल रखते हो और आप धनाढ्य बन जाते हो। कई—कई लोग अपने खाने—पीने का ख्याल रखते हैं, वे बिमार नहीं होते। कई औरतें, जब उनके पेट में बच्चा होता है तो वे बेहद ख्याल रखती हैं। अगर वे ख्याल नहीं रखें तो बच्चा गिर सकता है। इसी तरह से आप भक्ति का भी ख्याल रखो। तुम्हारे अंतर में यह ज्ञान रूपी बच्चा ही तो है। ख्याल नहीं रखोगे तो यह गिर जाएगा। इसका कैसे ख्याल रखना है? जब सतगुरु नाम देता है, उसी वक्त

बीज बो दिया जाता है। उस बोए हुए बीज का किस तरह ख्याल रखोगे? उस नाम की मंजिलें बताई हैं। उन मंजिलों की धुनियां हैं। उन धुनियों का ख्याल रखना होता है। कैसे रखना है? जिस मंजिल पर भी हमारी सुरत जाती है हम उस मंजिल का ख्याल रखते हैं कि फलां मंजिल पर पहुंच गए हैं। अब अगली मंजिल को पकड़ना है। अगर हम ख्याल को भूल जाते हैं या दिमाग में नहीं रहता है, तो वह कभी भी अगली मंजिल पार नहीं कर सकता है। सो इसका हर वक्त ख्याल रखना पड़ता है। एक धुनि को छोड़ कर अगली धुनि को पकड़ना है। अब कई लोगों के दिल में ये बातें भी आई होंगी कि रात और दिन यही बातें करते रहते हैं। यह क्या तमाशा है? ये बातें सुनने की नहीं है। ये तो देखने की हैं, करके देखने की। ये बनावटी बातें तो नहीं हैं। बनावटी मेरी होंगी परन्तु कबीर साहब तो बनावटी नहीं कह गए। स्वामी जी महाराज तो बनावटी नहीं कह गए हैं। इसी तरह से ऋषि—मुनियों ने भी इशारा तो किया लेकिन ये काल व माया से बाहर नहीं गए। सतगुरु के चरणों की धूल उनके मस्तक नहीं लगी। अगर वह धूल उनके मस्तक को लग जाती, तो ब्रह्मा, विष्णु भी सष्टि रचना के काम में नहीं फंसते। वह धूल मस्तक पर लग जाती, तो उनका काम अंग ढ़ीला पड़ जाता। आपने कई लोग देखे होंगे कि वे किसी काम के नहीं रहते हैं। वे तो शब्द की कमाई में लग जाते हैं। सारी दुनिया की तरफ से उनका मोह टूट जाता है। विषय—विकारों से बच जाते हैं। सनातन धर्म में, कई लोग कहते हैं कि यह बाबा छठी या सातवीं भूमिका का है। इस छठी, सातवीं भूमिका में ही सारे के सारे उस महात्मा को देखते रहते हैं। यह सारी ही दुनिया से मुंह मोड़ लेता है। पर वह आगे चलने की कोशिश नहीं करता। उस भूमिका पर जाकर थक जाता है। सन्तमत में उन भूमिकाओं से आगे चले जाते हैं। सन्तमत में सारा

ख्याल और ज्ञान भी रहता है। आप पूछोगे कि ये ज्ञान कैसे रहता है?

पहले जमाने में लोग कपालिया सहारते थे। वह सांस का रोकना था। वह जमाना ही ऐसा था कि उस वक्त उम्र लंबी हुआ करती थी। सो वे सांस रोके पड़े रहते थे। आज वह जमाना नहीं है। अब तो जमाना है, सहज योग का, सुरत–शब्द के योग का और असलियत पर चला जाए तो उस सुरत–शब्द के योग अथवा सहज योग से सहज और कोई भी योग नहीं है। सारे हठ योग हैं। सारे बीमारी देने वाले योग हैं। सुरत–शब्द का योग ही एक सहज योग है। इसको 60 वर्ष का भी और 8 वर्ष का भी कर सकता है। पर यह मन मर्जी से नहीं किया जा सकता है। इसके लिए सच्चा रहबर (मार्ग दर्शक) पकड़ना पड़ता है। जब रहबर पूरा मिल जाता है, तो दोबारा पूछने की जरूरत नहीं पड़ती है। एक ही बार में अपने शिष्य को सब कुछ समझा देता है। आप पूछोगे कि वह किस प्रकार? जिन्होंने नाम लिया है और जो शरण में आए हैं उनको अपनी छाती पर हाथ रखकर पूछना चाहिए कि जब दो–दो, ढ़ाई–ढ़ाई घंटे समझा दिया जाता है तो क्या उनको फिर से पूछने की जरूरत पड़ती है? वे पूरी तरह से समझ जाते हैं। अगर उस वक्त भी वे नहीं समझते हैं तो उनको चरणों की धूल नहीं लगती है। वे खाली रह जाते हैं। फिर वे अनाप–शनाप बातें बकते रहते हैं। फिर तो वे महात्मा को ही दोष देते हैं। महात्मा, संत सतगुरु तो एक ही बार में वह रास्ता बता देते हैं। वे बार–बार नहीं बताते।

तो मैं आप लोगों को बता रहा था कि चरणों की धूल जब लग जाती है तो जीवन सफल हो जाता है। मैं ख्याल की बातें बता रहा था। जिनका मन नहीं टिकता वे शिकायत करते हैं। उन्हें अपने छठे चक्कर पर अपने गुरु का ख्याली रूप बना लेना चाहिए। जब वह रूप बन जाता है तो वह रूप फिर डिगता नहीं है। ख्याली

से फिर असली बन जाता है। अगर हम उस रूप को छोड़ने की कोशिश करें तो भी वह रूप हमें नहीं छोड़ता है। हम उनको छोड़ने की कोशिश करते हैं। हमें यह कोशिश करनी भी चाहिए। आप कहोगे कि अभी तो आप यह कह रहे थे कि ख्याली रूप बनाना चाहिए और साथ ही कहते हो कि छोड़ भी देना चाहिए। अगर तुम इसे नहीं छोड़ोगे तो धोखा भी खा जाओगे। उस रूप को छोड़ कर आगे चलने की कोशिश करो। मैं तजुर्बे की बातें कहता हूं, बनावटी नहीं। जब आप आगे चलने की कोशिश करोगे तो उस रूप से आगे भी एक न्यारा रूप मिल जाएगा। उस रूप को नूरी सतगुरु कहते हैं। वह नूरी सतगुरु कभी भी हमारा साथ नहीं छोड़ता है। जैसे कई कबीर साहब के अनुयायी बात तो कह देते हैं, पर बेचारे बाद में घबरा जाते हैं। कहते हैं कि अभड़ पुरुष है। यदि उस अभड़ पुरुष का संग करोगे तो तिर जाओगे। कई लोग कहते हैं कि अभड़ पुरुष बाधा डालते हैं। वे घटिया आदमी हैं। आपने कबीर साहब की वाणी सुनी होगी–

अभड़, अभंगी पीव है, ताका निर्भय दास।
तीन गुणों को मेहल के, चौथे किया निवास।।

तीनों गुणों को छोड़कर, तीन गुण हैं–रजोगुण, तमोगुण, और सतोगुण। इन तीन गुणों को ही तीन लोक कह देते हैं और तीन गुणों वाला ही काल माया का देश है। इन तीनों को छोड़कर चौथे किया निवास। कबीर साहब कहते हैं, बताओ फिर अभड़, अभंगी क्या करेगा? अभड़ अभंगी तो उनकी मदद करता है क्योंकि वह भंग नहीं होता है और सदा ही निर्भय रहता है। फिर भी कई लोग कहते हैं कि इस बात को हम नहीं मानते हैं। क्या और भी कोई गवाह है? हां, कबीर साहब कहते हैं–

आदि, अंत और मध्य लों, अभड़, सदा अभंग।
कबीर ता कर्ता का, कभी न छोड़े संग।।

कबीर अभड़ अभंगी पीव का कभी भी साथ नहीं छोड़ता है क्योंकि उन का वही तो सहारा है। इस तरह से जब वह धूल मस्तक पर लग जाती है। वह अभड़ हमारे साथ रहता है और हमको शांति मिल जाती है। ये कहने और बताने के न्यारे—न्यारे तजुर्बे हैं। आगे तो वही बातें आ जाती हैं कि **सतगुरु सिर पर राखिए।**

सतगुरु को सिर पर रखने का मतलब, मैं अपना ही बताता हूं। कबीर साहब का क्या मतलब था, उसका मुझे पता नहीं है। उसके सिर पर रखने का मतलब यही है कि हर वक्त उस शब्द का ख्याल रखो। उसको कभी भी मत भूलो। पर शब्द तो दस प्रकार के हैं। आप कौन से का ख्याल रखोगे? जिसे पूरा मुर्शद नहीं मिला है, शब्दों का भेद नहीं बताया तो वह पहले ही शब्द में बैठ जाएगा। पहली ही धुनि को अभड़ समझ लेगा। वह पहली धुनि को ही कर्ता पुरुष मान लेगा। पहली को ही वह निर्भय और निर्वैर मान ले और उसी को सारी दुनिया का कर्ता मान लिया तो वह बेचारा रह ही गया। सो संत सतगुरु जब नाम देता है, शिक्षा देता है, दसों प्रकार के शब्दों को खोलता हुआ चलता है। इसलिए पूर्ण संत सतगुरु का शिष्य कभी भी धोखा नहीं खायेगा। धोखा तो वही खाते हैं जिन्हें आसन का पता ही नहीं है। उनको न आसन ही बताया जाता है और न उनको वह नाम ही बताया जाता है जिस नाम से हमारी आत्मा को शांति मिलती है। जिस नाम से हम अपने घर पहुंचते हैं। वह नाम जो हमें नामी से मिला देता है, वह कौन सा नाम है? वह नाम राधास्वामी है। एक प्रेमी ने कहा—राधास्वामी नाम से तो मुझे चिढ़ आती है। मैंने कहा—ये तो तेरे अच्छे कर्म हैं। उसने कहा—क्यों? मैंने कहा कि तू काल महाराज का खाजा है। काल महाराज तेरे से प्यार करता है। यह बड़ा अच्छा है। तेरे इतने बड़े भाग कहां से हुए कि तू राधास्वामी

नाम को निज नाम बना ले। अगर तू राधास्वामी नाम नहीं लेगा तो सात जन्म भी अपने घर नहीं पहुंच सकता। उसने कहा—मैं ओ३म् को मानता हूं। मैंने कहा कि तू ओ३म् को नहीं मानता ओ३म् के शब्दों को ही मानता है। अगर ओ३म् को मान लेगा तो राधास्वामी को भी मान लेगा। उसने कहा—उसे तो हम नहीं मानते। मैंने कहा—तेरी मर्जी है, फिर तू ओ३म् को क्या मानता है? बता तू कौन से ओ३म् को मानता है? क्या तूने कभी अपने अंतर में ओ३म् की धुनि सुनी है? उसने कहा—तुम तो पागल बनाते फिरते हो। क्या कभी ओ३म् की धुनि भी होती है। मैंने कहा—अरे भले आदमी! उसी धुनि से तो चारों वेद बने हैं। उस धुनि की ही तीन लोक में रचना है। उस धुनि के बिना कुछ भी नहीं होता है। उस धुनि को हम तीन लोक की जान कहते हैं। पर इस ओ३म् से भी आगे और धुनि है। उस धुनि से ही जीवों का उद्धार होता है। उस ओ३म् की धुनि से सारा ही बैर—विरोध एक तरफ लग जाएगा और तुम समझ जाओगे। उस ओ३म् की धुनि सुनने से ही तो पूर्ण शांति मिलती है। अब कोई करे तो करे भी क्या? कुत्ते की पूंछ को चाहे छः महीने नलकी में रखो, जब भी निकालोगे तो मोड़ खा ही जाएगी। उनकी शिक्षा ही ऐसी होती है। उसके बड़ों ऋषियों—मुनियों ने तो ओ३म् की बड़ी बड़ाई की है। गुरु नानक साहब ने भी ओ३म् की बड़ाई की है। वे कहते हैं—

एक ओंकार सतनाम कर्ता पुरूष निर्भय, निर्वैर।
अकाल मूर्त अजूनी सैभं गुरु प्रसादि जप।

अगर तुम एक इसी बात को लेना चाहते हो, तो कैसे लोगे? जहां गुरु के चरण हैं वहीं तो गुरु के चरण की धूलि मिलती है। उससे आगे केवल सत्तनाम की बातें आ जाती हैं। वहां से ही सतगुरु के चरणों की धूलि मिलनी शुरू हो जाती है।

मैंने आप लोगों को बताया कि सतगुरु के चरणों की धूलि के

लिए बड़े—बड़े चक्कर काटते हुए चले गए। उन को धूल नहीं मिल सकी। आप प्रश्न कर सकते हो—क्या आपको सतगुरु के चरणों की धूल मिल गई है? इस बारे में तो मैं क्या कह सकता हूं। मैं तो इतनी ही बात बता सकता हूं कि जिसे सतगुरु के चरणों की धूलि मिल जाती है, वह दुनिया का भिखारी नहीं बनेगा। जिसे सतगुरु के चरणों की धूलि मिल जाती है, तो वह अनपढ़ भी विद्वान बन जाता है। जिसे सतगुरु के चरणों की धूलि मिल जाती है, वह निर्भय हो जाता है। वह बंदूक और पिस्तौल के पहरे नहीं रखता है। जिसको सतगुरु के चरणों की धूलि मिल जाती है यदि उसे जहर भी दे दिया जाए तो उस के जहर का भी अमत बन जाता है। मीरा बाई को सतगुरु के चरणों की धूलि मिली थी। उसके जहर का अमत बन गया था। अंगद साहब को सतगुरु के चरणों की धूलि मिली थी। उन्होंने एक मुर्दे को दरिया में से निकाल लिया और उसके ऊपर बैठकर बाहर निकल आया। उसके गुरु महाराज ने कहा—इसके पेट को खोलकर खा ले। जब उसने उसका पेट खोला तो उस काठ के मुर्दे में हलवा भरा था। उसको उसने खाना शुरू कर दिया। महाराज नानक साहब ने कहा—अरे पगला! तू यह क्या कर रहा है? औरों को भी दे देना। सभी ने कहा कि ये तो बेवकूफ है मुर्दा खा रहा है। हम तो मुर्दा नहीं खाएंगे। अब सतगुरु की मौज को कौन समझ सकता है? इसीलिए तो कहा है—

सतगुरु राजी तो कर्ता राजी।
काल कर्म की लगे न बाजी।।

जब सतगुरु के चरणों की धूलि लग जाती है तो बताओ क्या काल उसका पीछा कर सकता है? नहीं, काल तो उसका मुजरा करके ही चलेगा। काल उसको बंदगी करता है। काल उसकी इज्जत करता है। काल की इज्जत क्या है? मैंने पहले ही बता

दिया है कि जिसका कोई टाइम होता है, जिसकी कोई मियाद होती है। दूसरे शब्दों में वक्त का नाम काल है। वक्त अवतारों में भी आता है। वक्त ऋषि—मुनियों में भी आया। आप पूछोगे कि क्या संतों में वक्त नहीं आया? मैं कहता हूं संतों में भी आया और उन्होंने भी चोला छोड़ा। फिर आप कहोगे—वे अमर किस तरह से हुए? वे शब्द में ही समा गए। वह शब्द ही सारी दुनिया की जान है। उसका समाया हुआ वापिस नहीं आता है। आप पूछोगे—उस शब्द के समाने पर कैसा आनन्द आता है? उस आनन्द का वर्णन तो न तुम कर सकते हो और न ही मैं कर सकता हूं। अगर तुम बताना चाहते हो तो मैं तुम से बाहर का आनन्द पूछ लेता हूं। आप उसको थोड़ा सा भी नहीं बता सकते हो। आप कहोगे—हम क्यों नहीं बता सकते हैं? आप किस तरह बता सकते हो? क्या तुम अपने घर गहस्थी के आनन्द को बता सकते हो? तुम रात और दिन जूतियों से पिटते रहते हो, रात दिन बेइज्जती कराते रहते हो। फिर भी तुम उसमें से निकलना मंजूर नहीं कर सकते। तुम तो इसी आनन्द को नहीं छोड़ सकते। वह तो बड़ा ही टेढ़ा आनन्द है। उसका वर्णन कैसे किया जा सकता है? सो संत तो इस प्रकार कहते हैं—

हिल मिल खेलूं शब्द में, अंतर रही न रेख।
समझों का मत एक है, क्या पण्डित क्या शेख।।

उस आनन्द का वर्णन कोई भी नहीं कर सकता है। पर बात तो सतगुरु के चरणों की धूलि की चली थी। वह कब मिलती है? कहते हैं कि सतगुरु सिर पे राखिए। तुम उस सतगुरु को सिर पर रखने का मतलब समझ गए होगे कि तुमने हर वक्त उस नाम को याद रखना है। हम नाम को छठे चक्कर से नीचे ही याद रखते हैं। यह तो नाम है। जब हम छठे चक्कर पर इस नाम की जरब लगाते हैं तो यही सतगुरु चरण की धूलि है और जब हम वहां की

धुनकारें सुनते हैं यह सतगुरु को सिर पर रखना है। यही धुनि अगली धुनि को पकड़वा देती है और दूसरी तीसरी धुनि को पकड़वा देती है। हम कुल पांच ही धुनियां कहते हैं और पांचो नाम भी देते हैं। हम भी इन पांचों धुनियों को बताते हैं। ये पांच नाम एक बार ही में नहीं जपे जाते हैं। अगर कोई ऐसा हो तो बताओ।

एक प्रेमी ने मुझसे कहा—सतलोक जाकर भी पांचों नाम जपते हैं। मैंने कहा—यह गलत है। धोखा खा जाओगे। आप तो विषयों के कीड़े हो। मुझे भी विषय सिखाते हो। आप गिर जाओगे। मैं तो सीधा आदमी हूं। कोई भी ऐसी बातें नहीं करता है कि सचखण्ड में जाकर कोई जाप करता हो। वहां तो जाप नहीं करते, वहां तो धुनि होती है। वह चुप रह गया। मैंने कहा—आपने तो सुमिरन ही किया है। आप छठे चक्कर से आगे नहीं गए हो। मैं आपकी बड़ी भारी इज्जत करता हूं। मैं तो सीधा आदमी हूं और सीधी बातें ही कह देता हूं कि ये पांचों धुनियां हैं ये हमारे पांच धुनात्मक नाम हैं। इन्हीं धुनियों के अंदर से जाना पड़ता है। सो इनको आहिस्ता—आहिस्ता पकड़ कर आगे चढ़ना पड़ता है। इन्हीं को तो सिर पर रखना है। उनको भूल जाओगे तो गिर जाओगे। अगर उनको छोड़ दोगे तो भी आगे नहीं पहुंचोगे। मंजिले—मंजिले अपने ठिकाने पहुंचा जाता है। मैं तो यही बात समझा हूं कि इन्हीं को याद रखना है। हर वक्त इनका ख्याल बनाए रखना। जब तुम्हारा ख्याल पक्का (पुख्ता) बन जाता है तो फिर सतगुरु सिर पर ही है। जब तुम पहली मंजिल पर पहुंचोगे तो सतगुरु के चरणों की धूलि मिल जाएगी। यही स्वामी जी महाराज कहते हैं कि पहली मंजिल पर पहुंचने पर त्रिलोकी का मालिक बन जाता है। और उसकी हजारों आफतें भी दूर हो जाती हैं। बल्कि हम लोग तो जो सतगुरु बताता है वह आसन भी नहीं लगाते। अगर वह आसन ही लगा लिया जाए तो सुरत शान्ति में आ जाती है। हम

हजारों बीमारियों से बच जाते हैं। पर आजकल के कई—कई गुरु तो आसन भी नहीं बताते हैं। अपने शिष्यों से धोखा करते हैं। एक मिनट में ही हजारों लाखों को कह देते हैं—क्या नाम मिल गया है? उत्तर मिलता है कि मिल गया। फिर तो चलो। अरे पगले! संतों ने तो कई देर लगाई है। कई घंटे लगाए। पहले जमाने में तो कई—कई घंटे सेवा करवाते थे। पर जीव की वह ताकत नहीं रही। फिर भी सतगुरु कहते हैं कि गुरु के चरणों की धूल मस्तक लाग रही। उस धूल के मस्तक पर लगने का आप क्या मतलब समझते हो? जब वह धूल मस्तक लग जाती है तो सारी ही दुविधा दूर हो जाती है। पर कोई भागी ही ऐसा हो सकता है जिसकी दुविधा दूर हो चुकी होगी। क्योंकि वह अपने गुरु के चरणों की धूल पर पहुंच गया होगा। जब तक वह धूल मस्तक में नहीं लगेगी दूविधा दूर नहीं होगी। वह धूल मस्तक में तो है पर जब तक तुम उस धूली तक नहीं पहुंचोगे दुविधा दूर नहीं हो सकती है। दुविधा कौन—कौन सी हैं? सभी दुविधाओं को तो बताया भी नहीं जा सकता है।

लग रही आफता, नहीं धापता।
मग की गेल हो रहा चीता।।
कहे चिम्मन अंत में जागा, रीते का रीता।।

बड़ी भारी दुविधा लगी हुई है। ऐसा कौन है जिसको दुविधा नहीं लगी है? दुविधा ने तो सभी को पकड़ रखा है। किसी भी सुखी आदमी को देख कर आप उससे बातें करो, वह यही कहेगा कि मेरे जैसा दुखी तो कोई भी नहीं है। इसी आधार पर तो नानक साहब जी ने कहा है—

नानक दुखिया सब संसारा।
सुखिया सोई जो नाम आधारा।।

सुखी तो वही है जिसको सतगुरु के चरणों की धूल लग गई है। जो नाम का आधार ले चुका है। यही सहजो बाई कहती हैं—

धनवन्ते सभी दुखी, निर्धन दुख का रूप।
साध सुखी सहजो कहे, पाया भेद अनूप।।

अर्थात् सभी दुखी हैं। धनवान तो इसीलिए दुखी हैं कि कभी कोई नुकसान न हो जाए या कोई यार (दोस्त) पैसे लेकर न मुकर जाए। रात को ये फिक्र रहती है कि कोई डाका न पड़ जाए। निर्धन दुख का रूप बने हुए हैं। उन बेचारों को शाम को तो रोटी मिल गई पर सुबह का पता ही नहीं है। बच्चों को रोटी, कपड़ा मिलेगा या नहीं मिलेगा। क्या बनेगा? क्या नहीं बनेगा? अगर ये मालिक को प्यारा बना लें तो इनकी परवाह वह स्वयं करेगा। जैसे एक लड़की अपने घर में रहती है वह अपने परिवार से प्यार करती है। लेकिन शादी के बाद इन सभी के प्यार में परिवर्तन आ जाता है। वह उस प्यार को भूला देती है जो भाइयों का, मां—बाप का था जब वह अपने प्रीतम का प्यार पा लेती है तब परवाह नहीं करती है। सो हमारी सुरत का प्रीतम कौन है? उसका प्रीतम वह राधास्वामी दयाल है। वह शब्द है, वह विवेक है, ज्ञान है और अगर हम उसकी शरण ले लेते हैं तो सारे ही प्यार टूट जाते हैं और सारी ही श्रद्धा ढ़ीली पड़ जाती हैं। एक ही श्रद्धा रह जाती है। इसी को कबीर साहब कहते हैं—

एक साधे सब सधैं, सब साधें सब जाहिं।
कहे कबीर अब सोच समझ मन माहिं।।

वे कहते हैं कि आगे तुम्हारी मर्जी है। जो मैंने कहना था, वह तो कह दिया। सो कभी भी उस सतगुरु को सिर से नीचे मत उतरने दो। कभी भी उस सतगुरु का ख्याल मत भूलो। उनको हर वक्त अपने ख्याल में ही रखो। तुम जिन्दा बन जाओगे। इसीलिए कबीर साहब कहते हैं कि मेरे मस्तक लाग रही गुरु चरणों की धूल। जिसने इस धूल की कद्र की और जो इस धूल तक पहुंच गया उसका जीवन सफल हो गया। आगे कहते हैं—

जब ये धूल चढ़ी मस्तक पर दुविधा हो गई दूर।

अब। धूल चढ़ने का मतलब क्या है? हमें उस जगह पर पहुंचने पर प्रकाश मिल गया तो हमारी सभी दुविधाएं दूर हो जाती हैं। आप कहोगे कि कोई प्रमाण देकर बताओ। मैं आपको प्रमाण देकर समझाऊंगा। कई लोग फिल्म देखने के बड़े शौकीन हो जाते हैं। जब वे फिल्म देखते हैं उनको बड़ी भारी खुशी होती है। वे उस आनन्द में खाना पीना भी भूल जाते हैं। बाहर के आनन्द (फिल्म के आनन्द) में तुम सब कुछ भूल जाते हो। फिर वह तो अन्तर में एक कुदरती फिल्म चलती रहती है। जब उस रील के तुम दर्शन करोगे, उस रील को देखोगे तो क्या होगा? बाहर की फिल्म देखने के लिए जब पैसे नहीं मिलते हैं तो घरवाली के कपड़े भी बेच देते हो क्योंकि शराब और सिनेमा तो जरूरी हैं। उनमें भारी आनन्द आता है। तभी तो घरवाली के कपड़े बेच देते हो। फिर जेवर भी बेच देते हो। सब कुछ बर्बाद कर देते हो। सो जब तुम अन्तर वाली रील को देख लोगे, तो उसके लिए भी सब कुछ ही छोड़ना और बेचना पड़ जाएगा। जब सिनेमा की फिल्म के लिए सब कुछ छोड़ना और बेचना पड़ जाता है फिर यहां तो बड़ा भारी जबरदस्त काम है। इसमें पांच तत्व हैं, दस इन्दियां हैं, पच्चीस प्रकतियां हैं। चार अन्तःकरण हैं इन सभी का आनन्द छोड़ देते हैं। तीनों गुणों से भी आगे चले जाते हैं। तुम शब्द भी गाते हो—

पांच तंत की ईंट बनाई, तीन गुणों की गारा।
छत्तीसों की छत लगाई, चिन गया चिनने हारा।।

उस चिनने हारे को तभी याद करोगे जब सारे खेलों को छोड़ दोगे और आगे जाकर उस से मिलोगे। अगर सारी जिन्दगी ये शब्द ही कहते रहे कि चिन गया चिनने हारा। इतनी—इतनी चीजें उसने बना दी तो कभी भी उद्धार नहीं होगा। उस चिनने हारे से मिलो और बताओ कि अब मुझे शांति आ गई है। मैं आपके पास

आ गया हूं।

प्रेमियो, सत्संगियो वह दुविधा दूर कब होगी? मैंने आपको बाहर की मिसाल देकर बताया है कि जितनी भी देर तुम उस सिनेमा की फिल्म देखते हो और उस आनन्द में पड़े रहते हो तब तक सारी ही दुविधाओं को भूल जाते हो, कोई भी दुविधा नहीं रहती है। इसी तरह जब तुम अभ्यास करके अंतर में चलोगे, तो सारी ही दुविधाएं भूल जाओगे और इसी आधार को नानक साहब की वाणी मजबूत करती है। जब वे बाबर बादशाह से मिले तो बाबर ने उनको शराब का प्याला दे दिया। नानक साहब ने कहा—

बाबर प्याला शराब का, उतर जाए प्रभात।
नाम ख्वारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात।।

शब्द का नशा ऐसा है कि वह कभी भी उतरता नहीं है। वह अपनी मस्ती में रहता है—

फट गया आसमान शब्द की घमक में।
लागी आग गगन में, सुरत की चमक में।।
शेष नाग कवच सब लगे कांपने।
अरे, हां पलटू ! सुन्न समाध की खबर नहीं आपने।।

ये तो मैंने सुन्न समाधि का वर्णन किया है। इस सुन्न से आगे चेतन समाधि है, चेतन से आगे और भी महा चेतन समाधि है। उस महाचेतन की समाधि का वर्णन यही है कि उसमें तुम्हें हर किसी चीज का ख्याल भी रहेगा और बे–ख्याल भी हो जाओगे। जैसे क्लोरोफोर्म की शीशी सुंघा कर डाक्टर चीरा फाड़ी करता है और तुम आंख खोले हुए देखते रहते हो फिर भी तुम्हें कुछ महसूस नहीं होता है। इसी तरह से जब अभ्यास करने वाला अपने अंतर में चला जाता है उसको बड़ी शांति मिल जाती है और उसकी दुविधा दूर हो जाती है। यदि मेरी बातों को एक भी सत्संगी समझ जाएगा तब भी मेरा जीवन सफल हो जाएगा। मुझे एक बार की बात याद

आती है। हमारे गांव में आर्य समाज का बड़ा भारी जलसा था। मेरी छोटी उम्र थी। कहते हैं कि ईश्वर सिंह और बस्ती राम की बातें होने लगी। बस्तीरात भजन गाया करता था। वह भजन गा रहा था। उस वक्त लोगों में बड़ी भेड़ चाल थी। बस्ती राम ने कहा—भाइयो! जब महर्षि दयानन्द लाहौर में सत्संग करके वापिस चला तो वहां दो आदमी रो पड़े। उनसे महर्षि दयानन्द ने पूछा—भाई! तुम क्यों रोए? उन्होंने कहा—महाराज! आप तो चल पड़े। हम तो दो ही आदमी हैं। महर्षि दयानन्द ने कहा—दो तो हो। उन्होंने कहा—हां जी! हम दो तो हैं। महर्षि दयानन्द ने कहा—मुझे फिर बताओ। उन्होंने कहा—महाराज जी! हम यहां दो ही आदमी हैं। महर्षि दयानन्द जी ने कहा—तुम झूठ तो नहीं बोलते हो। तुम फिर बताओ कि कितने आदमी हो? उन्होंने कहा—हम दो आदमी हैं। यह सारा देश हमें किस तरह टिकने देगा। महर्षि दयानन्द ने अपने आप से ही कहा—वाह रे दयानन्द ! तूने दो को तो काबिल बना दिया। अरे भले आदमियों ! कई लोग घबरा जाते हैं कि मैं तो एक ही सत्संगी हूं।

ऐ सत्संगियो ! मैं अपनी हालत बताता हूं। मैं तो अकेला ही था। मेरे गुरु महाराज भी वहां नहीं थे। वे जूई चले गए थे। मेरे ऊपर जो मुसीबतें आईं उन्हें तो मैं ही जानता हूं। जब वह बात याद आती है तो शरीर कांप जाता हैं। पर जिसको सतगुरु के चरणों की धूल मस्तक लग जाती है वह तो किसी की परवाह नहीं करता। जब स्त्री अपने पति के घर चली जाती है तो वहां सभी को अंगूठे दिखाती चलती है। ऐसे हाथ करती है जैसे उसे किसी की भी परवाह नहीं है क्योंकि उसके सिर पर उसके पति का हाथ होता है। इसीलिए—

सतगुरु राजी तो कर्ता राजी। काल कर्म की लगे न बाजी।।

जिनको पूर्ण सतगुरु मिल जाता है उन्हें किसी भी चीज से

घबराने की जरूरत नहीं है। पर आप लोग सतगुरु को तलाश नहीं करते हो। आप तो और ही बातों की तलाश करते रहते हो। वह सतगुरु की चरणों की धूल आप के मस्तक पर लग जाए। मस्तक लगने का मतलब तुम उस धूलि तक पहुंच जाओ। धूल और सतगुरु के चरण कौन से हैं? ये भी मैं बता देता हूं। जिसको प्रकाश मिल जाता है, ये सतगुरु के चरण हैं। इस प्रकाश को देखने से शांति मिल जाती है। पर कई लोग घबरा जाते हैं। किसी के दिल में यह बात आई होगी कि प्रकाश तो आता है पर प्रकाश गायब हो जाता है। यह बात और नहीं बता सकते हैं। यह ड्यूटी मेरी है जो कि मेरे सतगुरु ने लगाई थी। मैं बताता हूं कि जब तुम्हें प्रकाश दिखाई न दे या वह हट जाए तो क्या खड़े हो जाओगे? नहीं ! अपना टाइम पूरा निकालो। तुम पश्चाताप करो कि क्या बात हो गई? क्या गुनाह हो गया है? ऐसा काम क्यों हो गया? यह प्रकाश खत्म क्यों हो गया है। जब तुम्हारे अंदर ये बार—बार लहर उठेगी और बार—बार ऐसा करोगे, बार—बार कहते रहोगे कि यह काम क्यों हुआ? तो पश्चाताप के बाद वह प्रकाश फिर से तुम्हारे सामने आ जाएगा। प्रकाश तो कहीं जाता ही नहीं है। तुम्हारा मन ही डिग जाता है। आपने देखा है कि जब आप गाड़ी में बैठे होते हो, गाड़ी चलती है और दरख्त दौड़ते दिखते हैं। वास्तव में दरख्त तो नहीं भागते, भागती तो गाड़ी ही है। इसी तरह से जब तुम बैठते हो तो वह प्रकाश तो कहीं भी नहीं जाता है। तुम्हारा मन ही डिग जाता है। जब मन डिग जाता है तो तुम्हारे अन्दर परेशानी हो जाती है। मन काल का वकील है। मन क्यों डिगता है? हजारों करोड़ों जन्मों के पाप किए हुए होते हैं, इन पापों के कारण से इस मन में गुनावनें उठती हैं। हलचल होती रहती है। आपने सुना भी होगा कि यह मन पारे की तरह से चंचल होता है। जिसे सतगुरु पर विश्वास नहीं होता है उसके दिल में तो हर वक्त ही हलचल

मची रहती है। वह कभी भी ध्यान नहीं कर सकता है। सो अपने मन को टिका करके प्रकाश के पीछे लगना चाहिए। यही गुरु के चरणों की धूल है। यदि यह चरणों की धूल यहीं मिल गई तो एक दिन यह तुम्हें अपने ठिकाने पर ले जाएगी। मैं हिन्दी की चिन्दी नहीं बनाता हूं। मुझे चींटी की खाल उतारनी नहीं आती है। सीधी बातें कह देता हूं जैसी भी दिखती हैं। तुम उस प्रकाश को कब देखोगे? तुम किस चीज को प्रकाश कहते हो? आप जानते हो कि प्रकाश तो सफेद ही होता है। मेरी बातें नोट करके अपने दिमाग में बैठा लेना अगर तुम उस घर चलना चाहते हो तो। प्रकाश तो सफेद होता है लाल या पीला तो नहीं होता है। प्रकाश का मतलब ही सफेद होता है। यह सफेद कोई रंग नहीं बनता है। यह तो कुदरती ही होता है। वह हमारे अंदर सफेद खून की एक ताकत होती है। बाहर का खून जो हम पैदा करते हैं, वह निकल जाता है। अंदर की वह एक दो बूंद ही वह सफेद खून है और वही हमारे अंदर यदि जमा हो जाए तो हम उस सफेद समुद्र को देखना शुरू कर देते हैं। नानक साहब ने उसे अमतसर का तालाब बताया है। उस तालाब में संगमरमर का पत्थर लगा हुआ है। सफेद ही पानी है और सफेद ही तालाब है। सफेद ही कंगूरे लगे हुए हैं। बाहर अमतसर में उसी का नक्शा बना दिया गया है। इसी प्रकार से जब तुम अंतर में उस स्थान पर जाओगे तो वे सफेद हंस दिखाई देंगे। सफेद तालाब दिखाई देगा। तेज रोशनी दिखाई देगी। वह रोशनी तुम्हारे ही पास होती है। अगर उस रोशनी को तुम बरबाद करते हो तो तुम गुरु के चरणों की धूल को कुचलते हो। यही गुरु के चरणों की धूल लगी होती है। इस गुरु के चरणों की धूल को जो संभाल कर रख लेगा वह कभी भी नीचे नहीं रहेगा। एक दिन वह जरूर ही सतखण्ड में पहुंच जाएगा और अपने घर चला जाएगा। हम बाहर के चरणों की बड़ाई करते हैं। मैं भी

करता हूं। असली सतगुरु के चरणों की धूल के बारे में बताते समय तो लोगों के शरीर कांप जाते हैं। वे घबरा जाते हैं कि उसे तो छोड़ ही दें। मेरी तरफ से तो चाहे सभी चले जाओ। मैं सीधी बातें कहे बिना नहीं रहता। अगर तुम्हें सतगुरु के चरणों की धूल में पहुंचना है तो विषयों से उदास रहना सीखो और अभ्यास करो। जैसे महात्मा गांधी ने बुढ़ापे में आप लोगों को एक ऐसा प्रमाण दे दिया कि आपको ब्रह्मचर्य का पूरा पाठ ही पढ़ा दिया। उनका यही ध्येय था। ब्रह्मचर्य के कारण ही वे देश को आजाद करवाने में सफल हो गए। तुम भी अपने ब्रह्मचर्य के कारण अपनी सुरत को आजाद कर लो। अपनी सुरत को गुरु के चरणों में ले जाओ। सुरत को नहीं समझते हो तो उस आत्मा को गुरु के चरणों में ले जाओ। उस आत्मा को अपने घर वापिस ले जाओ। यह अमर तो है फिर इसका जन्म मरण मिट जाएगा। यही तुम्हारा सब से बड़ा पुण्य है।

काफी लोग तो अपनी आत्मा पर कुल्हाड़ी मारते हैं। अपनी आत्मा का वे सत्यानाश कर लेते हैं। वे खोटे कर्मों में पड़ जाते हैं। वे गुरु के चरणों की धूल कैसे देख सकते हैं? फिर उनको शांति कैसे मिलेगी? फिर उनकी दुविधा भी कैसे दूर होगी? इसीलिए कहते हैं—

जब ये धूल चढ़ी मस्तक पर, दुविधा हो गई दूर।

सारी दुविधा दूर हो जाती है। आगे कहते हैं—

ईड़ा, पिंगला सुषुम्ना नाड़ी जी, सुरता पहुंची दूर।

ये तीनों नाड़ी मैंने पहले भी बताई होंगी। संत महात्मा दीक्षा देते समय इनका अच्छी तरह से वर्णन कर देते हैं। ये तीन नाड़ियां हैं। इन तीनों नाड़ियों की हमारे सनातनियों में तीन धाराएं भी बनाई हैं। ये हैं—गंगा, जमना और सरस्वती। इन तीनों धाराओं में तीन चीजें भी बनती है—एक में चद्रमा, एक में सूर्य। इनमें नैगेटिव

और पोजिटिव दो तार मिलते हैं तो बिजली प्रगट हो जाती है। जब ये दोनों नाड़ियां बीच की नाड़ी से मिलती है तो उसमें रोशनी प्रगट हो जाती है। उसे ही सुषुम्ना नाड़ी कहते हैं। जैसे गंगा, जमना और सरस्वती हैं। सरस्वती बिचली धारा को कहते हैं। जब वे दोनों धारा सरस्वती में आकर मिलती है, जैसे मैंने पहले नैगेटिव और पोजिटिव बताए हैं इन दोनों तारों को मिलाने से उस निचले तार में रोशनी प्रगट हो जाती है। बिचला तार सुषुम्ना नाड़ी का ही होता है। यही गुरु के चरणों की धूल है।

ईंडा, पिंगला, सुषुम्ना नाड़ी जी, सुरतां पहुंची दूर।

सुरत कहां पहुंच गई? उस सुषम्ना के साथ वह ऊपर चली जाती है। इन दोनों नाड़ियों को वह छोड़ देती है। उन्हीं नाड़ियों का ही निशाना लेकर हमारे ऋषि—मुनि जो करते थे, उनकी और सब बातें तो भूल गए, बस एक तिलक लगाना शुरू कर दिया। इनसे अगर कोई पूछ ले कि इस तिलक का क्या मतलब है। बेचारे कई तो कह भी देते हैं कि यह तो हमारे ब्रह्मा, विष्णु, महेश का है। अरे भले लोगों! यह तो बताओ कि यह इस प्रकार क्यों किया जाता है? और क्यों करते हो? क्यों रोज तिलक लगाते हो?

एक प्रेमी ने कहा—हम तिलक नहीं निकालते, इतना अच्छा नहीं है। संत तो एक ही बार तिलक लगाते हैं। बार—बार नहीं। एक ही बार वे सतखण्ड में ले जाते हैं। तिलक तो लगा लगाया ही होता है। उसका तो निशाना बताना होता है। यह आप जानते हो कि ये हमारी तीनों नाड़ी हैं। यही हमारा तिलक हैं। यही हमारा त्रिशूल है। इस त्रिशूल की तो जरूरत ही नहीं पड़ती। यह नाक की डंडी है, यही त्रिशूल की डंडी भी है और इस डंडी के ऊपर तीन नाड़ियों का छटे चक्कर पर त्रिशूल है। जब सतगुरु दीक्षा देता है, इन तीनों नाड़ियों के बारे में समझा देता है कि इस नाड़ी में चन्द्रमा है। इसमें सूर्य है। इन दोनों को मिलाना है। दोनों

नाड़ियां मिल जाती हैं तो समझो सुरत बड़ी शांति से उस सुषुम्ना नाड़ी के द्वारा आगे चली जाती है। तीनों नाड़ियों को मिलाना पड़ता है। इन्हीं को गंगा, यमुना, सरस्वती तीन धाराएं भी कहते हैं। इनको मिलाने से सुरत में बड़ी शांति आती है। दोनों तरफ तो वे सफेद तिलक लगाते हैं इनका रंग सफेद होता है, बीच की नाड़ी सुषुम्ना लाल रंग की है। रक्तमय है। ये हमारी माता बहिनें मांग भरती है। सुहागिन तो वही है जिसने सुषुम्ना का रास्ता पकड़ लिया है। इससे बड़ी सुहागिन कौन हो सकती है। मुसलमान पत्ता निकालते थे। यही वह रास्ता था। यह सुषुम्ना का रास्ता है। आप लोग भी तो कहते हो कि तू नाक की सीध में चलना चाहता है। मैं तुझे नाक की सीध में चलाऊंगा। अरे! नाक की सीध में चलोगे तो अपने घर पहुंच जाओगे। नाक से हट कर मत चलो। यही तो निशाना है। इसी के समानान्तर ऊपर चला जाए। इसे हम भूल जाते हैं।

ईंडा, पिंगला, सुषमना नाड़ी जी, सुरता पहुंची दूर।

सुरतां पहुंची दूर का मतलब वह इन तीनों नाड़ियों को ही पीछे छोड़ देती है। वह सुषुम्ना के जरिये आगे बढ़ती है। सतखण्ड तक तो यह नाड़ी काम करती है। सतखण्ड से आगे चौथा लोक आ जाता है और तीन गुणों से आगे चले जाते हैं। वहां सतगुरु की अपार दया हो जाती है। सतगुरु हमारे साथ होता है वह आगे ले जाता है। वह सतगुरु कौन है? वह शब्द स्वरूपी सतगुरु होता है। जो साथ ही रहता है। आगे कहते हैं—

ये संसार विषयन की घाटी जी, निकसे कोई बिरला सूर।

ये संसार विषयों की घाटी है। विषयों की घाटी का मतलब भारी दुखों की घाटी है। इससे निकलना बड़ा मुश्किल है। पंजाबी शायर ने कहा है—

ओखियां घाटियां राह है लम्बा, दूजा नाल नहीं।
उत्थे नगदा नगदी हुंदे ने सौदे, घड़ी दोए दी उधार नहीं।
महरूम इसे बिच क्यूं रहंदा, पल्ले कोडियां चार नहीं।।

यह संसार दुखों की घाटी है। इसमें से कोई बिरला शूर ही निकलता है। शूर का मतलब है मजबूत और तगड़ा आदमी ही निकलता है। जैसे मैदान में जो लड़ाई जीत जाता है वही ईनाम का अधिकारी होता है। वही उसका आनन्द लेता है। यह भी एक लड़ाई का मैदान है और यहां लड़ाई में जूझना है। इसमें से निकलना बड़ा मुश्किल है। यह बिखमी घाटी है। इसमें से पहले तो घर वाले ही नहीं निकलने देते हैं। कभी बीवी दुश्मन हो जाती है। कभी धी—जंवाई दुश्मन हो जाते हैं और कभी रिश्तेदार और कभी पड़ोसी भी दुश्मन हो जाते हैं। इसी तरह से संसार एक बिखमी घाटी बना हुआ है। कोई न कोई तो इससे निकल भी जाता है। ऋषि—मुनि भी इसे त्याग कर चले जाते थे। इस बिखमी घाटी से निकलने के लिए इसे त्याग कर चले जाते थे। पर आगे और भी बिखमी घाटी है उससे वे निकल नहीं पाते थे। पाराशर जैसे संसार को तो त्याग करके चले गए। उन्होंने इस बिखमी घाटी को तो छोड़ दिया, पर आगे दूसरी बिखम की घाटी में फंस गए। श्रंगी ऋषि संसार की घाटी को तो छोड़ कर चले गए। बड़ा तप किया। परन्तु दूसरी बिखमी घाटी ने उनको घेर लिया। विश्वामित्र जी इस घाटी को छोड़कर चले गए और बड़ा भारी न्यारा स्वर्ग वैकुण्ठ बना लिया। पर आगे की दूसरी घाटी में वे फंस गए। वहां इन्द्र की अप्सरा ने उनको फंसा लिया। इसी शरीर में वे अप्सराएं बैठी हैं। वे कौन सी हैं? कबीर साहब जी कहते हैं जब अंतर में सुरत ऊपर की तरफ जाती है तो रास्ते में काल महाराज की 360 पुत्रियां मिलती हैं। वे रास्ते में रोकना शुरू कर देती है। पर मैं इन पुत्रियों की बातें नहीं जानता हूं। मैं घेरने

वालियों की बता देता हूं कि जब सुरत इस बिखमी घाटी से निकलने के लिए चलती है तो सतलोक से नीचे–नीचे सभी बिखमी घाटियां है। इस छठे चक्कर से नीचे–नीचे। पहली तो संसार की बिखमी घाटी है। इसके बाद देवी–देवताओं की बिखमी घाटी आती है। इसके बाद चलते हैं तो स्वर्ग–वैकुण्ठों की बिखमी घाटियां है। इनसे निकल कर फिर भी कोई चलता है तो आठ सिद्धियां और नौ निधियों की भी बिखमी घाटी है। ये ऋद्धियों–सिद्धियों की करामातों की विखमी घाटी है। इनमें फंसने वाला भी शब्द का रस नहीं लेता है और न कभी भी वह अपने घर जाता है। मोक्ष में कभी भी नहीं जा सकता है। वह काल में रह जाता है। अगर इनसे ऊपर निकलने की कोशिश करते हो तो सतगुरु की ऊंगली पकड़ो। अगर उनकी उंगली नहीं पकडते हो तो निकल नहीं सकते।

मेरे महाराज जी एक मिसाल दिया करते थे। एक बड़ी भारी नुमाइश लगी हुई थी। उस नुमाइश को दो पिता–पुत्र देखने के लिये चले गए। बेटे ने बाप की उंगली पकड़ रखी थी। उसने सारी नुमाइश देखी और उसका बड़ा भारी आनन्द लिया। नुमाइश देखते रहे। कुछ देर बाद ऐसी बात हुई कि पुत्र से अपने पिता की उंगली छूट गई। उंगली के छुटते ही लड़के ने नुमाइश में हाय–तौबा मचा दी। लोगों ने पूछा–अरे! क्या बात हुई? उसने बताया कि पिता की उंगली छुट गई। अब नुमाईश तो वही थी जिसका वह आनन्द ले रहा था। उस के आनन्द को भोग रहा था। वह नुमाइश तो पहले भी थी और पीछे भी थी। पहले तो आनन्द ले रहा था पर बाद में रोना शुरू कर दिया। यह क्या था? वह आनन्द पिता की उंगली में ही था। उस पिता की उंगली पकड़ने के कारण ही तो नुमाइश का उसे आनन्द आ रहा था। जब पिता की उंगली छूट गई तो उस नुमाइश के आनन्द को वह भूल गया। सारा आनन्द

चला गया। सो हमें भी अपने जीवन में अपने पिता की उंगली पकड़ लेनी चाहिए। सो कहते हैं–

सतगुरु राजी तो कर्ता राजी। काल कर्म की लगे न बाजी।।

जब हम अपने जीवन में अपने सतगुरु की उंगली पकड़ लेते हैं तो हमें संसार में कोई भी भय नहीं रहता है। संसार तो एक नुमाइश है। सो इस नुमाइश को भी देखते चलो और अपने सतगुरु की उंगली को चौकस होकर पकड़े रखो। सतगुरु की उंगली क्या है? यही बात फिर आ जाती है कि सतगुरु के चरणों की धूल ही उंगली है। उस शब्द की धुनि की उंगली को मत छोड़ो। उस सुमरन को मत छोड़ो। अगर वह धुनि छूट गई तो समझो उस पिता की उंगली छूट गई। सो यह संसार तो नुमाइश है और इसमें कभी दुख आता है। कभी सुख आता है। जिसने अपने पिता की उंगली को पकड़ लिया है, वह कभी भी नहीं घबराएगा। उसकी दुविधा तो दूर हो जाती है। सो–

ये संसार विषयन की घाटी, निकसे कोई बिरला सूर।।

अगर इस घाटी से एक भी निकल जाता है तो वह करोड़ों का उद्धार कर देता है। उसे गुरुमुख कहते हैं। स्वामी जी महाराज की वाणी है–

गुरुमुख की गति है बड़ी भारी। गुरुमुख कोटिन जीव उबारी।।

गुरुमुख करोड़ों जीवों का उद्धार कर देता है। गुरुमुख वही माना जाता है जो शब्द की कमाई करता है। गुरुमुख वही माना जाता है जो भैड़े कर्मों को छोड़ कर नाम के रंग में रंग जाता है। इसी कारण महाराज जी कहा करते थे कि गुरुमुखों का संग करोगे तो तुम्हारा उद्धार हो जाएगा। उन गुरुमुखों का संग यही था कि वे गुरुमुख तुम्हें भी गुरुमुख बना लेंगे। अगर मनमुखों का संग करोगे तो तुम भी मनमुख बन जाओगे। मनमुख किसको कहते हैं? जिसको शब्द का ही पता नहीं है। जिसको अंतर की धुनि का

पता नहीं है। जो उस धुनात्मक नाम को नहीं जानता है। वह तो बाहर माला में, तर्पण और राम में या किसी और में या राधास्वामी के बाहरी नाम में फंसा बैठा है। यह सतगुरु का साथ नहीं होता। यह बाहरी लोगों का साथ है। यह तो एक कूजड़ों का संग है। यह धुर नहीं पहुंचा सकता है। यह तो दो मूलियों में फंसा देता है। गुरुमुख तो वही है जो शब्द की महिमा करता है। और शब्द की धुनि का वर्णन करता है। आपने भी सुना होगा—

गुरु सोई जो शब्द स्नेही। शब्द बिन दूसर न सेई।।
शब्द कमावै सो गुरु पूरा। उन चरणन की होजा धूरा।।
और पहचान करो मत कोई। लक्ष अलक्ष न देखो सोई।।
शब्द भेद लेकर तुम उन से। शब्द कमाओ तन मन से।।

अर्थात् तुम उस शब्द की तन—मन से कमाई करो। यही गुरु के चरणों की धूल है। जो इस काम को पूरा कर लेगा वही इस संसार की घाटी से निकल जाएगा। मैंने दो घाटियां बता दी हैं। एक तो इस ससांर में जहां हम बैठे हैं, यही बिखमी घाटी है और दूसरी घाटी हमारे इस छठे चक्कर से आगे चलते ही आती है। उस बिखमी घाटी से तो वही भागी निकलता है जिसने सतगुरु के चरणों की धूल अपने मस्तक में प्रगट कर ली है और उस धूलि का सहारा ले लिया। आगे कहते हैं—

प्रेम भक्ति गुरु रामानन्द लाए जी, करी कबीरा मंजूर।

कबीर साहब कहते हैं कि प्रेम भक्ति गुरु रामानन्द लाये। आप लोगों ने सुना होगा कि भक्ति मार्ग का पहला पौधा लगाने वाले और रूहानी दौलत का खजाना लाने वाले कबीर साहब ही थे। वे प्रेम लाए थे। कैसे लाए थे? कई लोग कहते हैं कि कबीर साहब रामानन्द के शिष्य थे। हां, यह बिल्कुल ठीक है। यह तो कोई भी बात नहीं है। रामानन्द और कबीर साहब का प्रण था। कबीर साहब ने रामानन्द का उद्धार करना था। रामानन्द की बातें

आपने भी सुनी होंगी? मैंने कबीर जी की वाणियां सुनी हैं।

एक बार की बात है कि सुलतानी बादशाह के पेट में बड़ी भारी जलन थी। सुलतानी बादशाह दुखी थे। वे अपघात करने के लिए व करौंत से मरने के लिए उस जगह जा रहे थे। आगे उनको कमाल मिल गया। कमाल ने पूछा—क्या बात है? सुलतानी बादशाह ने अपना दुख बता दिया। कमाल ने कहा—वाह जी वाह! यह बीमारी तो संतों के पास जाते ही खत्म हो जाएगी। आप संतों के दर्शन करो। सुलतानी बादशाह ने पूछा कि ऐसा संत कौन है? कमाल ने बताया कि मेरे गुरु के गुरु रामानन्द जी हैं। आप उनके पास जाओ। रामानन्द तो जाति भेद भाव रखा करते थे। सुलतानी बादशाह मुसलमान था। जब वह रामानन्द जी के पास गया तो रामानन्द ने मुंह मोड़ लिया। जब उसने मुंह मोड़ लिया तो वहां कोई कटार पड़ा था सुलतानी बादशाह ने उसका सिर काट दिया और बोला कि मैं तेरे पास आया हूं और तू मुझसे घणा करता है। उसके सिर कटते ही एक तरफ से खून की धारा आई और दूसरी और से दूध की धारा आई।

मैंने कबीर जी की यह वाणी सुनी थी। उसे ही बताता हूं। वह उसको मार कर कमाल के पास आया और उससे कहा कि मुझे तो शान्ति नहीं हुई। मैं तो आपके उस गुरु को मार कर ही आया हूं। अब तू मुझे कोई दूसरा संत बता जिससे कि मुझे शांति मिले। ऐ सत्संगियो ! आपने सुना है—

संत चरण गंगा की धारा, जहां टिकैं हो निस्तारा।

संतों के जहां चरण टिकते हैं, वहीं भूमि पवित्र हो जाती है। स्वामी जी भी कहते हैं—

संत चरण अड़सठ से उत्तम, भूमि पवित्र जहां पग धरते।

भूमि पवित्र कैसे होती है? संतों की रेडिएशन से भूमि पवित्र होती है। जिस जगह वे जाते हैं, वह भूमि पवित्र हो जाती है।

उनकी रेडिएशन से वहां की हवा भी पवित्र हो जाती है। जैसे होम—यज्ञ करने से हवा पवित्र हो जाती है। हवा के पवित्र होने पर इन्द्र वर्षा कर देता है। इस प्रकार उन महात्माओं में से रेडिएशन निकलती है क्योंकि उनका सुमरन किया हुआ होता है। उससे वायुमण्डल पवित्र हो जाता है। सो—

संतों के दर्शन से आई टलै बला।
जो दण्ड सूली का, कांटे में टल जा।।

इसी तरह से दण्ड भी टल जाता है। कमाल ने सुलतानी बादशाह से कहा—मेरा गुरु कबीर है उसके पास चले जाओ। कई बार संतों के पास बीमार आ जाते हैं तो संत उनको बुरा वचन नहीं कहते, घटिया बात नहीं कहते। उनको श्रद्धा और विश्वास की बातें ही कहते हैं। महाराज जी कहा करते थे कि कभी गलत न बोलो। बोली से शांति मिल जाती है। संतों के पास में आने से ही तो कई लोग अपनी बीमारी को ही भूल जाते हैं। क्योंकि उनके प्रवचन में ही ऐसी धार और शांति होती है। उनकी सुरत का रूख उस तरफ जुड़ जाता है और बीमारी से ध्यान हट जाता है। वह उस बीमारी को भूल जाते हैं। तब सोच लो कि हम संतों की शरण में आ गए हैं। जब कबीर साहब के पास सुलतानी बादशाह गये और कबीर साहब के वचन सुने तो सुलतानी बादशाह अपनी बीमारी को भूल गया। उसे शांति मिल गई। जब उन्होंने सत्संग समाप्त किया उस वक्त कबीर साहब ने उनसे पूछा कि क्या बात है? उसने कहा—मैं सुलतानी बादशाह हूं, मुझे बीमारी थी और मैं आपके गुरु के पास गया था। मेरी बीमारी नहीं मिटी। शांति नहीं मिली। मैं आपके गुरु का सिर काट कर आया हूं। अब आपके पास आकर मुझे शांति मिल गई है। कबीर साहब ने उनसे पूछा—मेरे गुरु के पास आपको किसने भेजा था? सुलतानी बादशाह ने उनको बता दिया कि कमाल ने भेजा था। कमाल ने ही अब आपके पास भेजा हूं।

कबीर साहब ने कहा—जाओ कमाल! तुम्हारा पंथ नहीं चलेगा। कमाल कबीर साहब का पुत्र था। कहते हैं कि वह उनका सेवक भी था। पर कमाल का कोई पंथ नहीं चला। कारण कि कबीर साहब ने कहा कि तूने मेरे गुरु को मरवा दिया और अगर मैं नहीं होता तो तू सभी संतों को ढूंढ कर ही मरवा देता। पर उन्होंने सुलतानी बादशाह से कहा—तुम्हें अब शांति मिल गई है। अब तू मेरे गुरु के पास चल। वे दोनों रामानन्द जी के पास गए। कबीर साहब ने उनसे पूछा कि तूने क्या देखा यहां? सुलतानी बादशाह ने कहा—मैंने यहां दो चीजें देखी। इनके सिर को जब मैंने काटा तो उसके एक भाग से खून की धार आई और दूसरी ओर से दूध की धार आई। कबीर साहब ने उनको बताया कि यही चीज इनको ले गई। अगर इनमें दुई नहीं होती तो इनको कोई मारने वाला ही नहीं था। आप अब मुझे मार कर देखो।

जात नहीं जगदीश के, संतों के भी नाहिं।
जो फंसा जात में, लख चौरासी माहिं।।

अगर तुम जाति—पांति को मानते हो तो ईश्वर कत जातियां तो केवल दो ही हैं—**एक स्त्री और दूसरी पुरुष।** दूसरी जातियां तो कर्म के अनुसार ही बना ली गई हैं। कबीर साहब ने कहा कि उनके सिर से दो धारें निकली। अगर उनमें दुई नहीं होती तो उनके सिर से दोनों ही धारें दूध की आती। खून की धार नहीं आती और इनको कोई मार भी नहीं सकता था। यह दुई इनको मार गई। इन्होंने तो मुझ से भी पर्दा ही रखा था। मैंने इनका पर्दा हटवाया भी था। पर फिर भी कोई बात नहीं हुई। अब सुलतानी बादशाह ने कहा कि यह तो बात ठीक हो गई। मैंने इनका सिर काट दिया। मुझे ये बीमारी क्यों हो गई? कबीर साहब ने उनको बताया कि आपको अपने पिछले जन्म का पता नहीं है। पिछले जन्म में तू लकड़हारा था। तू एक गरीब आदमी था। रामानन्द उस

वक्त तुम्हारा गुरु था। तुम्हारा यही नेम था कि जो भी तुझे पहली वस्तु मिल जाती थी तुम इनको भेंट में लाकर दे देते थे। जब तुम एक दिन गये तो तुम्हें सवेरे—सवेरे एक कटार मिला। जो कहीं रास्ते में पड़ा था और तुमने लाकर रामानन्द जी के चरणों में भेंट कर दिया। जब तुमने इसे उनको भेंट चढ़ाया तो उन्होंने तेरे से कहा कि क्या तू इससे मेरा सिर काटेगा? कहते हैं—

संत वचन पलटे नहीं, पलट जाए ब्रह्मण्ड।
साधु बोले सहज स्वभाव, साधु का बोला मिथ्या न जाय।

सो कबीर सहाब ने उनसे कहा—ऐ सुलतानी बादशाह ! ये उस वक्त के कर्म थे। जब इन्होंने ये कठोर वचन कहे तो तुम्हें इनसे जलन हो गई कि इन्होंने इतने कठोर वचन क्यों कहे? अच्छा होता अगर तू यह सोच लेता कि सतगुरु कुछ भी कहे, ये इनकी अपनी मर्जी है। सतगुरु का हक ही होता है। सतगुरु सतगुरु ही होता है। तूने इस बात का दुख मान लिया। इसी रंज के कारण तुम्हें यह बीमारी लगी और वही बीमारी अब भी तुम्हें दुख दे रही थी। उसका बदला लेने के लिए तुम्हें जन्म लेना पड़ा। उनका वचन भी पूरा हो गया और उसी कटार से इनका सिर कट गया। अब तुम जाओ, तुम्हारा उद्धार हो जाएगा। उन्होंने रामानन्द जी का सिर उनके धड़ पर रख कर कहा—जाओ आप भी इस जन्म में तो मेरे गुरु बन कर आए थे अगले जन्म में मेरे शिष्य बनकर आओगे। अब रामानन्द जी अगले जन्म में उनके पास धर्मदास बन कर आए। मैं तो कबीर साहब की वाणी की ही बातें बताता हूं। मेरी अपनी कोई भी बात नहीं है। कबीर साहब के बोध सागर में ऐसी बातें लिखी हैं। सो कभी गुरु शिष्य को तारता है तो कभी शिष्य गुरु को तार देता है। आपने भी यह मिसाल सुनी होगी—कभी नाव गाड़ी में और कभी गाड़ी नाव में भी रखनी पड़ जाती है।

दोनों का भाग बराबर होता है। इसी तरह से गुरु भी दुर्लभ

होता है और चेला भी दुर्लभ हो जाता है। स्वामी जी कहते हैं कि गुरु शिष्य का ये मेल बड़े भाग से ही मिलता है। जब पूर्ण सतगुरु मिल जाता है उसका लेखा ही निमड़ जाता है। पूर्ण सतगुरु का अपनाया हुआ जीव कभी नर्क में नहीं जाता है।

सतगुरु लुहार, भंगी और धोबी या मां बनकर भी आते हैं। सतगुरु चौकीदार बनकर भी आता है। आप कहोगे कि क्या चारों काम करता है? हां, वह सभी काम करता है। अगर तुम ये बातें पूछना ही चाहते हो कि सतगुरु कोटि जन्मों के किए हुए सभी पापों को धो देता है तो उसने भंगी का काम किया या नहीं? बेहद मैली आवरण चढ़ी हुई सुरत के वह सारे मैल उतार देता है तो सतगुरु धोबी का काम करता है या नहीं? जब बेहद खोटे किये हुए कर्मों को सतगुरु पल भर में उन्हें जला देता है उस वक्त वह लुहार बना कि नहीं? इसी तरह जब सतगुरु सोई हुई रूहों को आवाज देकर जगाता है उस वक्त वह चौकीदार का काम करता है। सो यह तो हमारी समझ का ही फेर है। सतगुरु मां का काम भी करता है। सतगुरु बाप का काम भी करता है। सतगुरु भाई और स्त्री का काम भी करता है। अगर तुम इन सभी बातों को पूछोगे तो बड़ा विस्तार हो जाएगा। सो वह तो सभी तरह के काम करता है। जैसे अवतार भी काम करते हैं। मैंने 'भक्त माल' में किसी समय पर एक बात सुनी थी। एक सखोबाई थी। उसका वंदावन से बड़ा भारी प्रेम था। वह एक दिन जा रही थी। एक दम उसके दिल में यह बात आई कि अगर किसी का साथ हो जाए तो मैं भी वदांवन जाऊं और बिहारी जी के दर्शन करके आऊं। वह पानी का घड़ा लेकर आ रही थी और उसके आगे एक जत्था जा रहा था। उसने पूछा—कहां जा रहे हो? उन्होंने कहा—वदांवन बिहारी के दर्शनों के लिए जा रहे हैं। सखोबाई ने एक दीवार में बने स्थान पर घड़ा रख दिया और यह सोचकर कि चाहे कोई मारे

या छोड़े, बाद में देखा जाएगा। वह भी बिहारी के दर्शन करने के लिए उनके साथ ही चल पड़ी। वह 15 दिन बाद वापिस आई। तब उसने देखा कि घड़ा तो वहीं रखा था। वहीं से घड़ा उठाकर घर पर आ गई। जब वह घर पर आई तो घर वालों ने उससे किसी भी तरह की कोई बात नहीं चलाई। उसने सोचा कि देखती हूं कि कोई मेरे जाने के बारे में कोई जिक्र करता है या नहीं। पर किसी ने भी जिक्र नहीं किया। पर किसी चलती बात पर एक बार उसने कहा—वंदावन में तो इस तरह की चीजें देखीं। घरवालों ने आश्चर्य से पूछा—तू वंदावन कब गई थी? सखोबाई ने कहा—मैं तो 15 दिन वहां रहकर आई हूं। उसके पति ने कहा—तू तो पिछले 15 दिनों से मेरे साथ ही रही है। तूने मेरी सेज भी बिछाई है और मेरे पास सोती भी रही है और मेरे फलां—फलां काम भी तूने किये हैं। तब सखोबाई ने कहा—क्या ये सब काम मैंने ही किए हैं? उसके पति ने कहा—हां, ये तूने ही किए हैं। सखोबाई ने पूछा—ये तो बिहारी जी ने ही मेरी मदद की है। उसने सोचा कि तूने तो उसको बेहद दुख दे दिया और तेरे ये सब ही काम उसी ने किये हैं। तो आप सोचो, वह स्त्री बना कि नहीं?

वह ड्राईवर (चालक) भी बनता है। उसको तो आप कुछ भी बना लो। वह वही बन जाता है। भक्त हेत मैं नारी बना और गाड़ी वान भी बना। सो सतगुरु तो उसी का नाम है जो तुम चाहो उसको वही बना सकते हो। सतगुरु को तुम नचा सकते हो। पर सतगुरु के तुम बन जाओगे तभी तो वह तुम्हारा कुछ बनेगा। तुम अगर सतगुरु के नहीं बने तो फिर सतगुरु तुम्हारा कैसे बन सकता है? पर बाहर के सतगुरु को मनाना तो बेहद मुश्किल है। अन्तर वाला गुरु अगर मनाना पड़ जाता है तो वह आसान हो सकता है। पर बाहर का सतगुरु प्यारा होगा तभी वह अन्तर वाला जल्दी मनाया जा सकता है। सो कबीर साहब ने यह बात कही है कि—

प्रेम भक्ति गुरु रामानन्द लाए, कबीर करी मंजूर।

यह प्रेम भक्ति तो रामानन्द जी ही लाए थे जो पहले आचार्य माने जाते हैं। पर रूहानी दौलत का खजाना तो सब का सब कबीर साहब ने ही बांटा है। उन्होंने असीम खजाना बांटा। जितने भी संत आए सभी सीमित हो कर आए पर कबीर साहब ने तो सीमा से बाहर होकर असीम काम किया है। पर एक बात कबीर साहब ने भी कही कि—

हम धुर घर के भेदी, लाए हुक्म हजूरी।

वे हजूर (उस मालिक) का हुक्म ही लेकर आए थे।

काशी में हम प्रगट होए, रामानन्द चिताए।
साहब का परवाना लेकर, हंस उबारन आए।।

इधर स्वामी जी महाराज ने कहा है—

राधास्वामी नाम प्रगट हुआ कब से।
राधास्वामी आए तब से।।

अर्थात् राधास्वामी दयाल ने आकर न तो भयानक बात कही और न ही कोई रोचक बात कही। उन्होंने तो सारी यथार्थ बातें ही कीं। इसलिए हमारा 'सार वचन' महा पवित्र ग्रंथ है। उसमें सभी यथार्थ बातें ही मिलती है। जितनी बार भी पढ़ोगे, नई—नई बातें निकलती चली जाएगी। अभ्यासी का पहला काम ही उसका पाठ करना होना चाहिए। अभ्यासी चूकना नहीं चाहिए। इसे सतर्क होकर पढ़ो। उसका पर्दा अपने आप ही खुलता चला जाएगा। शांति मिलती चली जाएंगी। क्योंकि सब से पहले हम अभ्यासी के लिए तीन चार चीजों का नेम बता देते हैं। उन नियमों का पालन नहीं करोगे तो गिर जाओगे। उनका पालन करोगे तो तिर जाओगे। इस तरह से शांति मिलती चली जाएगी। मैंने कबीर साहब की थोड़ी बातें आपको बताई। मैं छोटी उम्र में सुना करता था। आज एक भाई ने शब्द कहा है—

मस्तक लाग रही मेरे गुरु चरण की धूल।
जब ये धूल चढ़ी मस्तक पर दुविधा हो गई दूर।
ये संसार विघ्न की घाटी, निकसे कोई बिरला सूर।।

इससे बिरला शूर वीर ही निकलता है।

प्रेम भक्ति गुरु रामानन्द लाए, करी कबीर मंजूर।।

कबीर साहब ने ही प्रेम भक्ति को जिसे रामानन्द लाए थे उसे पूरा किया था। सो जो भागी अपने सतगुरु की शरण ले लेता है वही इस घाटी से निकलता है अन्यथा निकलना बड़ा कठोर कार्य है। सतगुरु—सतगुरु तो सभी करते हैं। पर सतगुरु की शरण तो कोई बिरला ही लेता है। एक शब्द और बता देता हूं—

गुरु—गुरु में भेद है, गुरु—गुरु में भाव।
सोए सतगुरु बंदिए, शब्द बतावै दाव।।

सुना सै हमने गुरु अपने का ज्ञान .....।
धूंए से महीन पवन से झीना, ना वाके जीव और जान।
कब लग उसका वर्ण बखानूं, लौ लागे ना ध्यान।।
दष्टि—मुष्टि में आवै कोनी, ना वाके पिंड प्राण।
देखत—देखत नैना थकगे, सुनते—सुनते कान।।
खसखस दाना, मेरू समाना, राई में खलक जहान।
चौदह तबक का गर्व निवारा, रहा ठाम की ठाम।।
हिन्दू तो वेदों में ढूंढे, मुसलमान कुरान।
ये दोनों कागद में रहगे, हाथ न आया निजनाम।।
ता सुमरे भय काल न व्यापै, ये पद है निर्वाण।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, मिट ज्यांगे आवण जाण।।

जैसा सत्संग था वैसा शब्द कह दिया। दोनों हिन्दू और मुसलमान कागजों में ढूंढते रहते हैं, निजनाम किसी को हाथ नहीं आता है। कई भाई प्रश्न करते हैं कि निजनाम किस प्रकार का

होता है? **निज नाम उस धुनात्मक नाम को कहते हैं जो उस ठिकाने पहुंच जाता है। वह फिर नहीं आता है। बाकी सब बनावटी नाम हैं। सब मनमुख नाम हैं। अपनी मर्जी से हम छठे चक्कर से नीचे आकर बना लेते हैं।** जब हम छठे चक्कर से ऊपर चलते हैं तब निजनाम मिलता है। एक के बाद एक वे बदल जाते हैं। जैसे शब्द की दस धारें बन जाती हैं। शब्द की नौ धारें छोड़ कर दसवीं धार तक पहुंचना पड़ता है। मंजिलों की 18 पौड़ियां बन जाती हैं। 17 पौड़ियों को छोड़कर 18 वीं में पहुंचना पड़ता है। इसी प्रकार की रंग बिरंगी और भी काफी बातें देखने को मिलती हैं। इनको छोड़कर आगे आखरी धुनि में जाना पड़ता है। सो जब सतगुरु की शरण में चले जाते हैं जीव का भला ही भला हो जाता है। पर साधु महात्मा कोई भी हो किसी के पास जाओ लेकिन किसी की निंदा मत करो। यह कोई बात नहीं। किसी में कोई गुण दिखाई देता हो उसी को बताओ कि मैं वहां गया था। मेरे साथ तो ये बातें हुई। आपको यह भी पता है कि सतगुरु नाम शब्द का है। ज्ञान, समझ और विवेक का नाम है। जब अंतर की मंजिलों का ही पता नहीं है तो कुछ भी नहीं बन सकता है। इस बारे में भी खोल कर बता दिया है। अब मैं एक बात और बताता हूं एक भाई सत्संग के लिए मेरे पास आया। मैंने कहा—हम सत्संग में मीठे चावल और दाल बनाते हैं। उसने कहा—हम जो कुछ भी बनाएं बना लेने दो। उसने 36 पीपे देशी घी के लगा दिए। ऐसा काम तो कोई भागी ही करता है। उसने दस हजार आदमियों का खाना बनाकर पूरी यज्ञ कर दी। इसी तरह से दादरी का भाई शामलाल आया उसने कहा—मेरी इस जमीन पर आश्रम बना लो। मैंने पूछा—क्या तूने जिन्दगी में और भी ऐसा काम किया है? उसने कहा—नहीं, बस यही किया है। मैंने कहा—जब तक पथ्वी रहेगी तब तक तेरा नाम रहेगा। तूने ऐसा कोई भी काम नहीं किया है।

तूने बेटे पोतों के लिए बहुत किया है। पर तेरे लिए तो आज ही यह बीज बोया है। तूने तो नहर की रेती में जौ बो दिए हैं। बहुत जल्दी फलें—फूलेंगे। सो यह काम तो कोई भागी ही करता है। यहां भी सत्संग का काम चला तो भाई रतीराम, चाचा साधु राम बातें करने लगे। चाचा साधु राम ने कहा—वहां जमीन है, वह ले लो और सत्संग घर बना लो। मैंने कहा—जो 2000 गज जगह है वह दे दो। उन्होंने कहा—वह नहीं, संगत ज्यादा फैलेगी। मैंने कहा—क्या फैलेगी? उन्होंने कहा—नहीं। मैंने कहा—एक बात सुनो—

एक जाट और जाटनी बैठे बातें कर रहे थे। जाट ने जाटनी से कहा—चाहे कुछ भी हो, इस साल ईंख बोऊंगा। जाटनी ने कहा—स्याणा! ईख अपनी छाती पर बोइए। मेरे से तो ईंख की मेहनत नहीं होगी। जाट ने कहा—मेरी छाती पर तो एक ही पेड़ पैदा हो सकेगा। मेरे से नहीं बोई जा सकेगी। यही बात मैंने चाचा से कही—चाचा! अगर सत्संग घर बनाना है तो अपनी छाती पर बनाना। मुझे दुख न देना। मैं तो केवल सत्संग ही किया करता हूं। न मैं कहीं किसी का ट्रस्टी हूं और न मैं मेंबर हूं। मैं तो एक राधास्वामी नाम ही का मेंबर हूं। उसका सुमरन करता हूं। वही मेरा मां—बाप, गुरु है और सभी कुछ है। मैं तो उसी को मानता हूं। मैं और किसी चीज का रखवाला नहीं हूं और न मुझे कुछ और आता है। सो काफी भागी लोग अपने जौ बो जाते हैं गंगा के किनारे। महाराज जी कहा करते थे—या तो गीतड़े रहते हैं या भींतड़े रहते हैं शेष तो सब कुछ चला जाता है। **मूर्ति चली जाती है पर कीर्ति रह जाती है।**

भागी आदमी भाग्यवान काम कर जाता है। जिसका मौका लगे और हाथ में कुछ हो तो खूब काम करना चाहिए। ये बड़ी खुशी की बातें हैं। सो प्रेमियो, सत्संगियो! जो अपने मौके को चूक जाता है वह पछताता रहता है। मौका मत चूको। मैं अच्छे काम

करने वाले मौके को कहता हूं। बुरे काम से तो बचने की कोशिश करो। एक बार बुराई से बच जाता है तो आदमी कई वर्ष तक जिन्दा रह जाता है। अच्छे काम की जल्दी करो। शुभ काम जल्दी करो, बुरा रूक कर करो। क्योंकि बुरा काम सोच कर ही करना चाहिए। पता नहीं क्या नुकसान हो सकता है। मूर्खता का काम सोचकर करो और अच्छा काम जल्दी करो। हो सकता है कि फिर कोई बाधा डाल दे और बाधा डाल दे तो मन की बात मन में रह जाती है। इसीलिए कहते हैं कि—मन की मन में मत रखो। करने का काम कर जाओ। अच्छे काम में देर न करो।

अब हमारा भाई राजीव, संगत को देखकर बड़ा खुश होता है। अगर कोई कह दे कि संगत थोड़ी ही आई तो उसके तो प्राण ही निकल जाते हैं। यह कह रहा था कि संगत तो थोड़ी ही आई। मैंने कहा—भाई डर मत। संगत इतनी आएगी कि यहां इस जगह में बैठ भी नहीं सकेगी। तुझे इस जगह को और बढ़ाना पड़ेगा। इसने कहा—आगे और जगह पड़ी है वहां बढ़ा देंगे। मैंने कहा—यह तो मुझे भी पता है, पर यह स्टेज भी तो है। इसने कहा कि इसको उखाड़ देंगे। कोई देर नहीं लगेगी। जैसे एक टाटी हटा दी जाती है। इसके लिए तो इतना ही खेल है। एक दिन स्टेज यहां दिखती है तो दूसरे दिन और दूसरे ही स्थान पर होती है। पता नहीं क्या करता है। **यह भी विश्वकर्मा का ही अवतार है।** कितनी चीजें बना दी हैं। आप लोगों को इसका तजुर्बा बताता हूं। यह बड़ा अच्छा है। कई लोग यह भी कहते हैं कि मेरे नाम की भी छोटी कुटिया हो जानी चाहिए। उसने अपने आप ही ये बात बताई है कि यहां से लेकर पीछे तक कुटिया हों और आगे बरामदे बनते चले जाएं और अगर कोई ऐसा भाई भी आता है कि मैं पैसे देता हूं और इस पर मेरा नाम लिखवाता हूं तो वह आराम से भी बन जाए। उसको गरीब भी बना ले और अमीर भी। यह इसकी अपनी

तरकीब है तो बताइए क्या विश्वकर्मा से कम है? इतनी बड़ी बात है। मैंने कहा—वाकई तेरा तजुर्बा भी बढ़िया है। सो जो आदमी ईमानदारी, सच्चाई से जो बात सोचता है और काम करता है उसका काम भी जल्दी बन जाता है। मैं और रतीराम बातें किया करते थे कि भिवानी में कोई कुटिया या छोटी सी जगह बन जाए तो अच्छा हो। ये कहता था कि अब वे बातें तो भूल गए थे। ख्याल बना हुआ व्यर्थ नहीं जाता है।

एक दिन महाराज जी ने यह बात बताई थी कि हुमायूं हारने के बाद कहीं चला गया। वह बैठा था। अकबर की मां साथ में थी, अकबर पेट में था। वह हिन्दुस्तान का नक्शा बना रही थी। हुमायूं ने कहा—बेगम साहिबा! क्या करती हैं? उसने कहा—मेरे पेट में बच्चा है। मैं उसे हिन्दुस्तान का नक्शा खींचकर बताती हूं। तू तो भाग आया, ये सारे हिन्दुस्तान का बादशाह बनेगा। इसे मां कहते हैं। उसने कहा—मैंने इसको अभी शिक्षा दे दी है। दो मिशालें मुझे याद हैं। इसी कारण अकबर बहुत बड़ा बादशाह बना। **सो अपने विचार ऊंचे रखने चाहिएं। कभी भी अपने विचारों को गिरने मत दो। यह तुम्हारी मर्जी है कोई भी पूजा-पाठ करो। करते रहो विचार ऊंचे रखो। अगर उसी पूजा में रूककर बैठ गए तो रूके ही रह जाओगे। उससे आगे चलोगे तो मंजिले—मंजिले करके आगे पहुंच जाओगे। सो विचार ऊंचे और पवित्र रखा करो। विचार में बड़ी भारी शक्ति है। यह विचार का ही तो खेल है। चाचा साहब ने मुझसे कहा था कि यहां ऐसे बनेगा और यहां पर इस प्रकार बनेगा। मैंने कहा—चलो। आपने सुना होगा, इनकी एक पुस्तक, चाचा साहब की डायरी के नाम से है।** कई किताबें और भी छपी हैं, एक राधास्वामी योग है। छः भाग हैं। सभी भागों का एक बहुत बढ़िया ग्रंथ बन जाता है। इन राधास्वामी योगों को पढ़ने से बड़ा भारी आनन्द मिलता है। पर मैं एक बात बताता

हूं जितना आनन्द मुझे अरमान रामायण में मिला, इसका नाम संकट मोचन रामायण भी है। दोहों के रूप में वह एक ऐसी रामायण बनी है, जो बात 10 चौपाइयों में कहने की थी, वह एक दोहे में ही कह दी। वह छोटी तो है पर बड़ी भारी लाजवाब है। मेरे दिल में आई कि हे महाराज! आप तो स्थूल शरीर से चले गए। आप अगर इस वक्त होते तो क्या कहते? आप तो पता नहीं क्या थे और क्या कर गए? उनकी बड़ी भारी दया थी।

।। राधास्वामी।।

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

जुलाई/अगस्त मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1	फतेहाबाद	23 अगस्त-29 अगस्त
2	रोहतक	30 अगस्त-05 सितम्बर
3	जीन्द	06 सितम्बर-12 सितम्बर
4	जुलाना	13 सितम्बर-19 सितम्बर
5	पानीपत	20 सितम्बर-26 सितम्बर

अहंकार अग्नि हिरदे जले,
सबसे चाहे मान।
तिनको जम न्योता दिया,
तुम हमरे मेहमान।।

अहंकारी आदमी जब दुनिया की नहीं सुनता तो ईश्वर की क्या सुनेगा। वह आत्मिकता से वंचित है। सदाचार से गिरा हुआ है, मनुष्यता से तो बहुत दूर। अहंकारी किसी दशा में ईश्वर का उपासक नहीं हो सकता।

जिनके मन में अहंकार पैदा हो गया तुम समझ लो उनकी बर्बादी के दिन निकट आ गये। घमण्डी का सिर हमेशा नीचा किया जाता है। वह कुत्ते की मौत मरेगा। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

प्राचीन काल में एक साधु बनारस में रहता था। वह वैराग्य का जीवन व्यतीत करता था। बहुत लोगों ने उससे लाभ उठाया। धीरे-2 उसका यश बढ़ गया। यश जान का ग्राहक होता है। बनारस के राजा ने साधु की पवित्रता का हाल सुना, खुशी के साथ उससे मिलने आया और उसका शिष्य हो गया। जब उसकी रानी ने सुना वह भी दर्शन के लिये आई और वह भी साधु की चेली हो गई। अब क्या था, शहर में चारों और धूम मच गई। पहले तो साधु कहीं आता जाता नहीं था, मगर जब अधिकता के साथ लोग उसके पास आने लगे तो इसके एकान्त को धक्का पहुंचा। वह कभी-2 राजमहल में भी जाता, मगर साधु था समझदार। जब वह घर वापिस आता तो चित्त को चंचल पाता। कई दिन तक इस पर विचार करता रहा। जब वह अकेले अपने झोपड़े में होता तो शान्ति रहा करती थी। केवल महल से आते ही अपने अन्दर बदलाव देखता था। वह मन में कहने लगा, हो न हो

महल में मेरा आदर किया जाता है और लोग मेरी प्रशंसा करते हैं। इस प्रशंसा से मुझ में अहंकार आ गया है। साधु ने महल का जाना बन्द कर दिया मगर राजा कब मानने वाला था। अन्त में जब वह राजा के बुलाने से महल में गया तो वह सीधा रानी के कमरे में चला गया। वहां कोई नहीं था। खूंटी पर नौलखा हार लटक रहा था। उसने उसे गले में डाल लिया और चलता बना और कहने लगा यही मेरे दर्द की दवा है। दरबान ने देख लिया। साधु झोंपड़े में आया और पांव पसार कर सो रहा। इतने में रानी को हार की याद आई। ढूंढा गया मगर पता नहीं लगा। कुछ देर के बाद दरबान ने कहा कि साधु ले गया है। साधु को पकड़ा गया। हार गले में था। सारे शहर में इसकी चोरी का समाचार फैल गया। आदरमान में बट्टा लगा। राजा ने भी इसको चोर समझा। साधु का चूंकि अपमान हो गया था, इसका चित्त ठिकाने आ गया।

जब कुछ दिन बाद राजा रानी को ज्ञात हो गया कि इसने महल में न आने के बहाने से यह चोरी की थी। वह दोनों क्षमा मांगने साधु के पास गये। साधु ने कहा-राजा ! दुनिया की चाल से मैं बहुत हार गया था। अब इस हार के चुराने से दुनिया मुझ से हार गई। अब आप दया कीजिये। न मैं आपका गुरु हूं और न आप मेरे चेले हैं। मैं इसी में खुश हूं।

आगामी मास का सत्संग

30 अगस्त सोमवार (रक्षा बन्धन) दादरी